मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

10897
2017

दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name) साचेत कुमार

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हां ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.)

ई-मेल पता (E-mail address)

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date) 13/07/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

7	9	1	7	8	3	6

अधिकतर उत्तर अच्छे हैं।
पाठ्यक्रम पर पकड़ अच्छी है
लेखन-शैली अच्छी है
भाषा प्रवाहपूर्ण है
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण ठीक है।
(अशुद्धियों पर ध्यान दें)

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained) 129

टिप्पणी (Remarks)

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51 बि

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)
R-11

A3

दृष्टि The Vision

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखे। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ ~~छायावादी लेखक जयशंकर~~ प्रेमचंद कृत उपन्यास गोदान से ली गई हैं।

प्रसंग- इन पंक्तियों में मि० मेहता व मालती के बीच के संवाद को दिखाया गया है। जिसमें उनके प्रेम संबंधी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है।

व्याख्या

पंक्तियों में मालती कहती है कि मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष से अधिक श्रेष्ठ है क्योंकि स्त्री-पुरुष बनकर रहने से व्यक्ति स्वयं में ही लीन रहता है, जबकि मित्र बनकर रहने पर एक दूसरे से प्रेम करते हुए भी व सहचर्य को प्राप्त करके भी जीवन व समाज की संपूर्णता के प्रति दायित्वों का निर्वहन किया जा सकता है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इसके साथ ही यह बंधन एक दूसरे को बांधता नहीं है बल्कि मुक्त करते हुए एक-दूसरे के विकास के क्रम में सहायक व पथ-प्रदर्शक बनता है। जिसके माध्यम से जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

- भाषा सहज व सरल है तथा प्रवाह में लिखी गई है, एकल बद्ध होने के बाद भी दुरूहता नहीं है।
- प्रेम के आदर्श रूप को व्यक्त किया गया है जिसपर छायावादी विचारों का प्रभाव दिखता है।
- प्रेम का समाज के प्रति सद्भावना के रूप को दिखाया है।

वर्तमान भोगमूलक प्रेम के दौर में प्रेम का यह रूप प्रासंगिक है जो साहचर्य व सामाजिक दायित्वों के साथ प्रेम की शक्ति का मार्ग दिखाता है।

Good

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय है। कभी कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद जी ~~के~~ उपन्यास गोदान से ली गई हैं।

प्रसंग- ~~उपरोक्त~~ उद्धृत पंक्तियाँ ~~में~~ मालती द्वारा कही गई हैं। जिसमें वह कहती है कि सभ्यता व आज के जीवन में धन का क्या महत्व है।

व्याख्या- आज के जीवन में समाज का आधार मूल्य धन है जिसके माध्यम से सब प्रकार से ~~श्रेष्ठता~~ पाई जा सकती है और अनेक अवसरों पर धन ने अन्य नैतिक मूल्यों को नीचा दिखाया है इसका उदाहरण मालती बताती है कि किस प्रकार उसके क्लीनिक में अमीर महिला के आने व गरीब महिला के आने पर उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है इसके साथ ही समाज में बहुत ही कम बार ऐसा हुआ है कि धन आंदोलन से हार हो। अर्थात इसमें मालती सामाजिक विडंबना को प्रस्तुत करती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली 110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, पत्रिका चौराहा, प्रयागराज | प्लॉट नंबर 45 व 45 A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

- पंक्तियों में प्रगतिवादी (मानवतावादी) मूल्यों का प्रभाव दिखता है।
- मानव के व्यवहार का सूक्ष्म अंकन किया गया है।
- भाषा हिन्दुस्तानी शैली में है जिसमें शब्दों का मोह न होकर भाषा की सहजता व प्रवाह पर ध्यान दिया है।

ये पंक्तियाँ आज के भौतिकतावादी युग में अधिक प्रासंगिक हैं जिसमें ~~सार्थक~~ ~~व्यापार~~ समाज के सभी मूल्य व विचार धन संचालित हैं ऐसा लगता है कि लेखक ने ये पंक्तियाँ आज के दौर के लिए ही लिखी हैं।

6

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है। अन्धकार का आलोक मे, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के महान निबंधकार रामचंद्र शुक्ल जी द्वारा रचित निबंध 'कविता क्या है' से ली गई हैं।

जयशंकर प्रसाद
स्कंदगुप्त

प्रसंग - इन पंक्तियों में लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि कविता का शुभ रूप व उद्देश्य क्या है।

व्याख्या - कविता के बारे में शुक्ल जी का मानना है कि कविता बिंबात्मक होनी चाहिए जिसको पढ़ने पर मन में चित्र अंकित हो। कविता का प्रभाव ऐसा हो जो व्यक्ति पर अलौकिक प्रभाव को व्यक्त करते हुए उसके जीवन में प्रकाश (आलोक) लाए। जो समाज के प्रति समर्पित कविता का मूल तत्व है।

कविता ही है जो सत और असत अर्थात नैतिक मूल्य व अनैतिक तत्वों के साथ ही जड़ व चेतन और बाह्य जगत को अंतर्जगत से परिचय कराते हुए व्यक्ति के मानसिक स्तर

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पर सकारात्मक प्रभाव प्रस्तुत करती है।

वस्तुतः रामचंद्र शुक्ल जी साहित्य को लोक मंगल की ~~साधना~~ साधनावस्था के रूप में मानते हैं। इस में कविता को भी सामाजिक मूल्यों के प्रति समर्पित मानते हैं।

10

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और निरन्तर नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में मधुर असाधु, प्रिय अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये इस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी लेखक यशपाल जी द्वारा रचित उपन्यास दिव्या से ली गई हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में मारीश द्वारा अंशुमाला (दिव्या) को जीवन के प्रति पुनः आसक्त करने के क्रम में जीवन का महत्व प्रतिपादित किया है ये पंक्तियां 'अंशुमाला खण्ड' से ली गई हैं।

व्याख्या - इन पंक्तियों में मारीश दिव्या को समझाता है कि जीवन का स्वरूप प्रवाह में है और इस प्रवाह में अच्छे व बुरे दोनों अनुभव आते हैं ऐसे में किसी बुरे अनुभव के कारण प्रवाह से विरक्त होना जीवन के मूल्यों के विरुद्ध है और सिर्फ व्यक्ति की एक हठ के समान है।

इस हठ से व्यक्ति प्रकृति के दायित्वों को भी पूरा ही नहीं करता बल्कि अपने जीवन की प्रासंगिकता को भी खण्डित करता है।

- यशपाल जी की ये पंक्तियाँ उपन्यास के बौद्धकालीन वातावरण होने के बावजूद सहज व सरल व बोधगम्य हैं।
- पंक्तियों में जीवन के उद्देश्य का दर्शन प्रतिपादित करते हुए मनुष्य को ही महत्वपूर्ण सिद्ध किया है।
- "मनुष्य भोक्ता हो नहीं कर्ता है" पंक्ति में पंक्तियों का मूलभाव व्यक्त होता है।

वर्तमान में व्यक्ति का स्वयं के प्रति आत्मिक चिंतन की जगह भौतिक पदार्थों व मूल्यों के प्रति समर्पण का भाव ये पंक्तियाँ तोड़ते हुए उसे जीवन को सार्थकतापूर्ण जीने को प्रेरित करती हैं।

G/A 6

(ट) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दे उसे कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ राजेन्द्र यादव जी द्वारा संकलित 'एक दुनिया समानांतर' की कहानी 'गुलकी बन्नो' ~~द्वारा~~ से ली गई हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में गुलकी के पति के द्वारा कही गई पुरुषप्रधान व स्त्रीशोषक विचारों को दिखाया गया है।

व्याख्या - गुलकी को पति द्वारा प्रताड़ित करने के क्रम में कूबड़ निकलने पर उसे त्याग कर दूसरी शादी कर ली जाती है। तथा इसके बाद उसको पुत्र प्राप्ति होने पर घर के कार्य के लिए गुलकी को फिर से लेने उसका पति उसके घर आया है। जिसमें वह उसको बता रहा है कि किस तरह रहना है कुछ भी हक नहीं जताना है नहीं तो प्राण ले लिए जाएंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

- समाज का शोषक चरित्र दर्शाया गया है
- समाज में स्त्री के वस्तुकरण व उसके शोषण का मनन कहानी में दिखाया है।
- ~~साथ~~ ही भाषा सहज व सरल है।

पंक्तियों में भारतीय समाज में नारी के अंतहीन शोषण व पितृसत्तात्मक व पुरुषप्रधान मानसिकता को प्रस्तुत किया है जिसमें स्त्री सिर्फ भोग्या व उपभोग की वस्तु समझी जाती है।

वर्तमान उपभोक्तावादी दौर में स्त्री के वस्तुकरण व शोषण के दौर को पंक्तियाँ एक नए अर्थ में सार्थक करती हैं।

G.A 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी है और भविष्य की भी है।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत है? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

प्रेमचंद समाज के प्रति प्रतिबद्ध लेखक हैं जिससे उनकी कृतियों में जहाँ तत्कालीन समाज की स्थितियां व चिंताएँ दिखती हैं वहीं वे ~~उनका~~ उनके समाधान का प्रयास करते हुए भविष्य की चिंताओं को भी प्रस्तुत करते हैं।

प्रेमचंद ने अपनी कृतियों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, गरीबी, किसान, दलित, स्त्री, वृद्धावस्था, बचपन छिन जाने, वेश्यावृत्ति व बेमेल विवाह जैसी समस्याओं को प्रस्तुत किया।

प्रेमचंद का रचनाकाल नवजागरण का काल था ऐसे में नवजागरण व स्वतंत्रता के मूल्यों को प्रस्तुत करने के साथ ही लोकतंत्र में धनतंत्र जैसे विकृत स्वरूपों को भी उन्होंने दिखाया। उदाहरण- गोदान के मिर्जा खुर्शेद के विचार

इसके साथ ही अभिजात वर्ग के समक्ष पत्रकारिता का समर्पण का मुद्दा भी वे अपने उपन्यास व कहानियों में दिखाते हैं। उदाहरण- गोदान का 'बिजली' पत्र

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर 45 व 45 A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

प्रेमचंद ने गरीब ग्रामीण कृषकों के शोषण व महाजनी व सामंती प्रथा के चलते उनकी दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। उदा॰ गोदान का होरी, पूस की रात का हल्कू

प्रेमचंद बेमेल विवाह को व्यभिचार का कारण मानते हैं और उनकी दयनीय स्थिति को वे गोदान की झुनिया, निर्मला उपन्यास की निर्मला के जीवन से दिखाते हैं जो परिवार के टूटने का कारण बनती है।

प्रेमचंद अपने उपन्यास सेवासदन के माध्यम से वेश्यावृत्ति की समस्या को उठाते हैं और गांधीवादी मूल्यों के माध्यम से इसको सुधारते भी हैं।

प्रेमचंद दलितों की स्थिति को भी न सिर्फ प्रस्तुत करते हैं बल्कि वे विरोध के मूल्य के माध्यम से समाधान भी देते हैं वहीं अंतर्जातीय विवाह। प्रेम विवाह को इसका समाधान बताते हैं। उदाहरण - गोदान में सिलिया व उसका परिवार व सद्गति में दुखी चमार की मृत्यु पर गोंडों का विरोध।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर 45 व 45 A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com

इसके साथ ही बुजुर्गों की स्थिति को वे 'बूढ़ी काकी' कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

बाल मनोविज्ञान व बचपन के दिन भावों की स्थिति को वे ईदगाह के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

प्रेमचंद ने भविष्य की चिंताओं को भी प्रस्तुत किया है वे एक तरफ व गोदान में सिलिया के पति की सांप्रदायिक दंगों में मृत्यु से सांप्रदायिकता को दिखाते हैं वहीं गोदान व रंगभूमि में औद्योगीकरण व शहरीकरण के चलते सामाजिक शोषण के नवीन रूप को प्रस्तुत करते हैं।

इतना ही नहीं वे व्यक्ति के अचेतन मन तक पहुंचते हैं और उसके स्वभाव का मूल कारण पता लगाने का प्रयास करते हैं कहानी 'कफन' इसी कारण उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में स्थापित है।

वे जहाँ परिवार के भीतर गांधीवादी मूल्यों के माध्यम से हृदय परिवर्तन द्वारा समस्याएँ सुलझाते हैं वहीं परिवार के बाहर के दलितों के लिए विद्रोह, तो जातिप्रथा के विरोध में प्रेम विवाह, कृषकों के लिए सामंती मूल्यों से मुक्त होने का सुझाव देते हैं।

वस्तुतः प्रेमचंद की कृतियों में समाज का समग्र चित्रण व मूल्यांकन के चलते ही रामविलास शर्मा भी 'उस काल का प्रमाणिक प्रस्तुतीकरण' मानते हैं। उनके साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार बनाती है।

11½/20

दृष्टि The Vision

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी अमरकांत द्वारा रचित है। जिसका संकलन एक 'दुनिया समांतर' में राजेन्द्र यादव जी ने किया है।

यह कहानी नई कहानी के दौर की है जिसमें कहानी का नायक शहरीकरण के प्रभाव के चलते अजनबीपन व अकेलापन की समस्या से ग्रस्त रहा है (चन्दर)

'खोई हुई दिशाएँ' में नई कहानी की विशेषताएँ -

- कहानी में नई कहानी के अनुरूप पात्रों की संख्या अत्यधिक कम है नायक चन्दर, उसकी पत्नी, उसकी पूर्व प्रेमिका व एक मित्र ही मुख्य पात्र हैं। मगर चंदर के अंतर्मन को ही कहानी प्रस्तुत करती है।
- चंदर के अंतर्मन के प्रस्तुतीकरण के चलते कहानी में घटनाएँ नहीं हैं पूरी कहानी में 'एक शाम' का वर्णन है।
- घटनाएँ न होने के कारण विश्लेषण की सघनता व्यापक है इसके साथ ही विचारों का बेलगाम प्रवाह प्रस्तुत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

किया गया है।

- नायक अपने मूल स्थान से कटे व शहरीकरण के चलते अपना अकेलापन व अजनबीपन से ग्रसित है जिससे वह 'पहचान की मांग' से पीड़ित है।
- कहानी में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का सम्यक प्रस्तुतीकरण है (सार्त्र)
- कहानी की भाषा भी नई कहानी के समरूप है जिसमें किसी विशेष शब्दावली का मोह नहीं है बल्कि एक स्थिति को प्रस्तुत करने के तौर में काव्य भाषा का प्रयोग किया गया है।
- भाषा में चेतनाप्रवाह है साथ ही सांकेतिक घटनाओं के माध्यम से स्थिति की सघनता को प्रस्तुत किया है।

उदाहरण - चंदर की पूर्व प्रेमिका द्वारा चाय में चीनी कितनी चम्मच पूछने का प्रसंग।

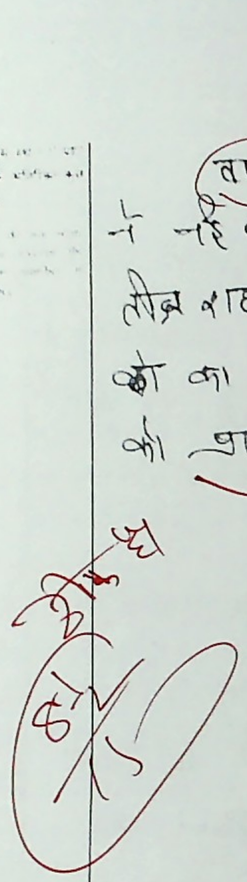

तन्हाई (तस्तुट) खोई हुई दिशाएँ कहानी में लेखक ने नई कहानी के दौर में स्वतंत्रता उपरांत तीव्र शहरीकरण के चलते उपजी स्थितियों को का व्यक्ति के मानसिक जीवन पर प्रभाव को प्रस्तुत किया है।

और ..

8/15

Copyright : Drishti The Vision Foundation

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

रामचंद्र शुक्ल जी निबंध संग्रह (विधा) के प्रमुख रचनाकार माने जाते हैं। उनकी निबंध विधा में सर्वश्रेष्ठ कृति "कविता क्या है"।

शुक्ल जी की काव्य दृष्टि-

- शुक्ल जी काव्य को लोक सापेक्ष व लोक प्रतिबद्ध मानते हैं उनका मानना है कि काव्य मनोभाव पर उपजे विचारों के माध्यम से ईश्वर को पाने का माध्यम है।
- वे मानते हैं कि काव्य का व्यक्ति की मनोभाव को उर्वर करने में योगदान होना चाहिए जिससे कि समाज के प्रति प्रतिबद्ध हो सके।

और गहराई लाएँ

4/15

Copyright : Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

नवदौर के नाटककार मोहन राकेश ने अपने प्रथम नाटक "आषाढ़ का एक दिन" में हिन्दी के रंगमंच के मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया। जिसमें पाश्चात्य रंगमंच से भिन्न मार्ग खोजने का प्रयास करते हैं।

मोहन राकेश मानते हैं कि भारतीय रंगमंच को भौतिक व विलासी प्रयोगों की जगह मानव संसाधन के बेहतर प्रयोग का प्रयास करते हुए संसाधनों का कुशल उपयोग करना चाहिए इसी क्रम में उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में मूलतः एक दृश्य के माध्यम से घटनाओं का मंचन किया।

वे रंगमंच में मानव संसाधन व सक्रियता पर प्रयोग करने पर बल देते हैं वे रंगमंच पर प्रकाश व आवाजों के माध्यम से नाटक की सघनता व प्रस्तुतीकरण की सफलता की बात करते हैं। उदाहरण के लिए 'आषाढ़ का एक दिन' में जब जब कालिदास व मल्लिका मिलते हैं बारिश होती है वहीं कालिदास व विलोम के मिलने पर

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

बादलों के गरजने को प्रस्तुत किया गया है।

नाटक में वे दृश्यों के बदलने की जगह अभिनय के प्रस्तुतीकरण व विवेचीकरण पर बल देते हैं। इस अर्थ में पाश्चात्य रंगमंच से वे अलग होते हैं क्योंकि पाश्चात्य रंगमंच में समय व वित्त व्यय अधिक लगता है वहीं भारतीय परंपरा न्यून व्यय के माध्यम से प्रस्तुतीकरण की रही है।

मोहन राकेश नाटकों को भी रंगमंच के अनुरूप व रंगमंच के लिए लिखने की बात करते हैं उनका मानना है कि नाटक की सार्थकता तभी है जब उसका मंचन हो सके। ऐसे में उन्होंने भारतीय रंगमंच के मूल्यों के अनुरूप नाटक लिखे और अन्य लेखकों को प्रेरित किया। उदाहरण के लिए - आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे, लहरों का राजहंस आदि।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर 45 व 45 A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

वस्तुतः मोहन राकेश ने भारतीय नाट्य विधा में उसके रूप व पारिभाषिकों के विवादों को समाप्त करते हुए प्रतिमान स्थापित किए जिससे नाटक व रंगमंच की सार्थकता प्राप्त हो सकी।

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

प्रेमचंद के समय मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रतिपाद्य नहीं किया गया था मगर फिर भी उन्होंने स्वाभाविक मनोविज्ञान को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया।

वे अपनी कहानियों में स्त्री मनोविज्ञान का सूक्ष्म अंकन करते हैं 'सुन्दरता व घमण्ड व चोली-दामन का साथ होता है' (अलग्योझा), स्त्री स्वभाव अनुसार घट होने लगी (बड़े घर की बेटी)

वे वृद्धजनों के मनोविज्ञान को भी अपनी कहानी में दिखाते हैं उनकी प्रसिद्ध कहानी 'बूढ़ी काकी' में काकी का चित्रण व यह कहना 'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनः आगमन है' मनोविज्ञान पर उनकी सूक्ष्म दृष्टि को दिखाता है।

इसके साथ ही ~~ईदगाह~~ ईदगाह तो बाल मनोविज्ञान की श्रेष्ठ पुस्तक है। जिसमें हामिद का अपनी उम्र से अधिक व्यवहार दिखाना वहीं गांव के अन्य बच्चों के साथ

Copyright : Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

मनोवैज्ञानिक उच्चकोटि के होने के कारण ही सफल रूप में प्रस्तुत हो पाए हैं।

वे जब बेमेल विवाह को व्यभिचार का कारक मानते हैं तो उस समय वे मनोवैज्ञानिक चिंतन को अपनी कहानी में दिखाते हैं (नया विवाह)

इसके साथ ही स्थितियों के बदलने पर व्यक्ति के मनोविज्ञान में परिवर्तन होता है फलस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन दिखता है। कहानी 'कफन' में घीसू और माधव द्वारा भरपेट पूड़ियाँ खाने पर भिखारी को जोश्न दान में देना उनके व्यवहार का मनोवैज्ञानिक रूप से सूक्ष्म अंकन ही है।

वस्तुत: प्रेमचंद को मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का ज्ञान न होने पर भी सामाजिक अध्ययन व समझ के चलते सिद्धांतों के अनुसार ही प्रस्तुतीकरण किया है उनके

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

मनोवैज्ञानिक अंकन में ही अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, देवराज जैसे कहानीकारों के आविष्कार संभावनाओं को देखा जा सकता है।

84/15

Copyright Drishti The Vision Foundation

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' विवेचन कीजिये। 15

'भोलाराम का जीव' कहानी फंतासी आधार पर हरिशंकर परसाई जी द्वारा लिखी कहानी है जिसमें भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार को दिखाया गया है।

इस कहानी में यमराज द्वारा यमलोक में भोलाराम की आत्मा के न पहुंचने की स्थिति को दिखाया गया है। पड़ताल करने पर पता चलता है कि भोलाराम की आत्मा एक दफ्तर में फाइल में फंसी गई है क्योंकि भोलाराम मरने से पहले सरकारी कर्मचारी था। जिसे सेवानिवृत्त होने के उपरांत पेंशन मिलनी थी, मगर रिश्वत न देने के कारण उसे पेंशन नहीं दी गई और वह मर गया।

कहानी के माध्यम से भारतीय सरकारी दफ्तरों में कार्य करने में रिश्वत की संस्कृति को दिखाया गया है।

रिश्वत न देने के चलते ही भोलाराम को जीवन भर पेंशन नहीं दी गई।

कहानी यह दिखाती है कि कार्यपालिका में भ्रष्टाचार किस प्रकार संस्थागत का रूप ले चुका है। जिसमें भोलाराम जैसे व्यक्ति शोषित होने को अभिशप्त हैं।

इसके साथ ही कहानी यह भी दिखाती है कि भ्रष्टाचार के चलते आम व्यक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। भोलाराम जैसे व्यक्ति अपने हक को प्राप्त नहीं कर पाते हैं और स्वतंत्र भारत में अधिकार विहीन मृत्यु को अभिशप्त हैं।

परसाई जी सामाजिक स्थितियों को प्रस्तुत करते हुए सामाजिक प्रभाव को अपनी कहानी में प्रस्तुत करते हैं। इस में उन्होंने यह कहानी आज़ादी के बाद के भारत की सरकार में दफ्तरों में फैले भ्रष्टाचार

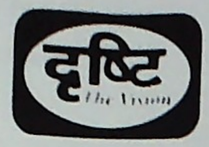

का निराकरण करती है।

यह कहानी राजीव गांधी जी द्वारा भ्रष्टाचार से योजनाओं के प्रभाव के बारे में कही बात का उदाहरण। पूर्ण प्रस्तुत करती है।

और है
8½/15

दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशो की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध है।

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतेन्दु युग के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी द्वारा रचित नाटक 'भारत दुर्दशा' से ली गई हैं।

प्रसंग - पंक्तियों में तम के द्वारा स्वयं का वर्णन कर बताया गया है कि वह क्या है।

व्याख्या - पंक्तियों में अंधेरा (तम) बताता है कि वह सृष्टि का नाश करने वाले तमोगुणजी का पुत्र है। अंधेरा(तम) का जीवन चोर, उलूक व लंपटों से चलता है और मूर्खों के मस्तिष्क में निवास करता है। और मेरे इन्हीं कर्मों के कारण मुझे अज्ञान या अंधेरे के रूप में जाना जाता है।

विशेष

- पंक्तियाँ आधुनिक ~~हिन्दी~~ खड़ी बोली के आरंभिक काल के दौर से बढ़ी है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली 110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर 45 व 45 A, हर्ष टावर 2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.DrishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

प्रभावकारी हैं।

- नाटक ने नवजागरण के उद्देश्य को सार्थकता को सिद्ध किया है।
- नाटक के शिल्प की दृष्टि से पंक्तियाँ कमजोर हैं।

वस्तुतः भारतेन्दु जी के दौर में इस नाटक को लिखने का उनका उद्देश्य नवजागरण व राष्ट्रवाद के मूल्यों का प्रसार करना था। जिसमें वे सफल रहे।

6/10

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मन मतन रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र स्त्री भोग्य है। मति भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते है।

संदर्भ-: प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी लेखक यशपाल जी के उपन्यास 'दिव्या' से ली गई हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में पृथुसेन को उसके पिता, पृथुसेन का दिव्या के प्रति प्रेम मोह होने पर उसे समझाने का प्रयास करते हैं।

व्याख्या:

पृथुसेन को समझाते हुए कहते हैं कि तुम्हारा दिव्या के प्रति प्रेम उसको जीवन साथी चुनने की इच्छा जीवन भर के प्रयत्नों के माध्यम से पायी गई समृद्धि सम्मान के लिए घातक होगी साथ ही व वंश के भविष्य के लिए भी नुकसानदायी होगी। इसी अर्थ में नीतिज्ञ लोगों ने नारी को पुरुष के लिए पतन का द्वार माना है।

वस्तुतः ये पंक्तियाँ बताती हैं कि निम्न कुल का पृथुसेन होने के कारण दिव्या के प्रेम का अधिकारी नहीं है दिव्या को प्राप्त करने के क्रम में वह समृद्धि, प्रतिष्ठा व सम्मान

भी खो देगा और उसके पूर्वजों के प्रयत्नों का नाश है।

विशेष:

- पंक्तियाँ समाज में वर्णभेद के प्रभावों को दिखाती हैं।
- सहज व प्राकृतिक मनोभाव के प्रेम का सामाजिक बंधनों के समक्ष समर्पण दिखाया है और उपन्यास में होता है।
- भाषा तत्सम होते हुए दुरूह नहीं है बल्कि सहज है।

वर्तमान दौर में ऑनर किलिंग जैसी विसंगतियाँ जो वर्तमान समाज में दिखती हैं वो पंक्तियों द्वारा समझा जा सकता है।

6/15

(५) संसार से तटस्थ रह कर शांत सुखपूर्वक लोक-व्यवहार संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी द्वारा रचित निबंध 'श्रद्धा भक्ति' से ली गई हैं।

प्रसंग - पंक्तियों में भारतीय मूल्यों को प्रस्तुत करते हुए भक्ति व श्रद्धा का भाव किसी व्यक्ति के प्रति आने की स्थिति को प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या - भारतीय मूल्य व्यक्ति को समाज के प्रति समर्पित मानते हैं इसीलिए तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक व्यवहार संबंधी उपदेश देने वालों का भारतीय परंपरा में अधिक महत्व नहीं रहा है। बल्कि जो समाज व संसार में घुस कर व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति जगाने वाले सम्माननीय रहे हैं। इसी लिए यहाँ उपदेशक ईश्वर नहीं है बल्कि जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विशेष

- लेखक की भारतीय समाज की समझ स्पष्ट है इसी कारण वह इस मूल्य को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं (उदा० - गौतम बुद्ध)
- साहित्य व विचारों का समाज के प्रति दायित्वों का मूल्य स्थापित
- भाषा तत्सम्, क्लिष्ट, सुगम्य

6

Copyright – Drishti The Vision Foundation

[redacted]

दृष्टि The Vision

(ड) उसकी आंखे बन्द हो गयी और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

संदर्भ - ये पंक्तियां महान उपन्यासकार प्रेमचंद जी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास गोदान से ली गई हैं जो उपन्यास के अंतिम पृष्ठ से हैं।

प्रसंग - उपन्यास के अंतिम पृष्ठों में जब होरी का अंत समय निकट है तब की स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - मृत्यु से पहले होरी के समग्र जीवन की सारी स्मृतियाँ बे-क्रम होकर आने लगी जिसमें उसके जीवन के अच्छे पल व उसकी अधूरी इच्छाएँ उसको दिखती हैं।

इनमें वह गोबर, धनिया का दुलहिन रूप के साथ-साथ गाय की उसकी अधूरी इच्छा को दिखती है। जो उसके जीवन के त्रासद अंत का अंततः कारण बनती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

विशेष -
- आम ग्रामीण आदमी के रूप में होरी का त्रासद जीवन का चित्रण
- सामाजिक शोषण के रूपों के चलते पंक्तियों में त्रासद स्थिति उत्पन्न
- भाषा हिन्दुस्तानी व प्रवाहपूर्ण

गोदान उपन्यास प्रेमचंद की रचनात्मकता की पराकाष्ठा है जिसमें एक तरफ वे यथार्थवाद का निर्मम चित्रण करते हैं वहीं खड़ी बोली को हिन्दी गद्य के रूप में पूर्णरूप से स्थापित करते हैं इसके साथ ही वे साहित्य को जनसमर्पित होने का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

6

दृष्टि The Vision

(क) मैला आँचल की भाषा शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैला आँचल आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणु जी द्वारा रचित प्रथम आंचलिक उपन्यास है। मैला आँचल ने ही आँचलिक उपन्यास के प्रतिमान गढ़े हैं। ये प्रतिमान भाषा शैली के स्तर पर भी दिखते हैं।

भाषा शैली -

- भाषा आंचलिकता का पुट लिए हुए है जिसके चलते आंचलिक वातावरण सजीव हो उठा। इसी क्रम में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया गया है।
  उदाहरण- मैला आँचल में पूर्णियांचल के आसपास की भाषा का प्रयोग
- क्षेत्रीय नाटक, गीत, संगीत को प्रस्तुत किया गया है।
  "जट जटिन का खेल, बिदेसिया के गीत आदि
- उपन्यास में देशज शब्दावली का प्रयोग किया गया है - उदाहरण - कायस्थ टोला, [illegible] गमगम आदि

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली 110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर 45 व 45 A, हर्ष टावर 2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

"कमली जब कचकचिया साबुन लगाती है तो पूरा गाँव गमगम करने लगता है।

- तद्भव शब्दावली का प्रयोग भी किया गया है।
- अंग्रेजी शब्दों का ग्रामीणीकरण किया गया है जो आंचलिकता को बढ़ाता है
  उदाहरण- भैसचरमन (Vice chairman)
  टीसन (station)
- तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया गया है मगर वहीं जहां पढ़े लिखे लोगों के वक्तव्य हैं जैसे डॉ॰ प्रशांत के द्वारा कहे वाक्य "प्यार की खेती"
- मुहावरों का प्रयोग किया गया है जिससे भाषा में प्रवाह बढ़ा है और आंचलिकता सजीव हुई है
  "पर थोक थोक का, नहीं तो किसी और का"

इसके साथ ही भाषा में सहज व सरलता है मगर कहीं कहीं क्षेत्रीय शब्दों के चलते उस क्षेत्र से ~~अपरिचित पाठक~~ अपरिचित पाठक को कठिनाई हो सकती है। मगर सामान्यत: भाषा सहज व ~~बोधगम्य~~ है बोधगम्य है।

वस्तुत: मैला आंचल उपन्यास की भाषा-शैली एक बड़ा कारण बनी है उसकी आंचलिकता को ~~स्पष्ट~~ करने में, कथानक व शिल्प ने मिलकर इसे आंचलिक उपन्यास में श्रेष्ठ उपन्यास के रूप में स्थापित किया है।

Copyright Drishti The Vision Foundation

[redacted]

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प योजना पर प्रकाश डालिये।

यही सच है कहानी मन्नू भण्डारी जी द्वारा नई कहानी के दौर की कहानी है जो डायरी शैली में लिखी गई है।

शिल्प योजना -

- कहानी की मुख्य पात्र डायरी शैली में अपने प्रेम जीवन के पक्ष को प्रस्तुत करती है जिसमें उसके निशीथ और संजय संबंधी विचारों का यथार्थपूर्ण चित्रण किया गया है। इसमें संजय व दीपा साथ साथ शोध कार्य कर रहे हैं वहीं निशीथ उसका पूर्व प्रेमी है। एक साक्षात्कार के क्रम में उससे कलकत्ता में मिलने पर जो दीपा के भाव जगत में विचलन व असमंजस है उसी का चित्रण इस कहानी में है।
- कहानी की भाषा सहज व चेतनाप्रवाह पूर्ण है जिसमें पूर्वदीप्ति का सहारा लिया गया है इसके साथ ही डायरी शैली

में कहानी लिखी होने के चलते दीपा का संपूर्ण सच प्रस्तुत हुआ है मगर संजय व निशीथ का वही पक्ष प्रस्तुत हुआ है जो बाह्य है।

- कहानी में घटनाएँ नाममात्र की हैं जिसमें कानपुर व कलकत्ता की घटनाएँ हैं साथ ही चरित्र भी कुल तीन ही हैं। मगर विश्लेषण से कहानी सम्पन्न है।
- कहानी में एक निष्ठ प्रेम में भी विचलन की संभावना को स्वीकार किया गया है
- कहानी में वाक्य छोटे-चुस्त व प्रवाहपूर्ण हैं ऐसा लगता है कि कहानी सोचते हुए लिखी है जिसके चलते कहानी में दुरूहता नहीं दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वस्तुतः मन्नू जी धारावाहिकों के लिए लेखन का कार्य भी करती थी इसका प्रभाव उनकी साहित्य कृतियों में भी दिखता है। यही कारण है कहानी में जो सरलता व विस्तृतता तथा कसाव दिखता है वह मन्नू जी की विशेषता है।

8/15

दृष्टि The Vision

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिए। 15

नई कहानी का दौर भारत में आज़ादी के बाद के दशक को मुख्यत: माना जाता है। इस दौर में शहरीकरण, अकेलापन, पारिवारिक टूटन, महिलाओं के बाहर व घर से निकलने से सामाजिक परिवर्तन को दिखाया गया है। टूटना कहानी नई कहानी के इन्हीं मूल्यों / विशेषताओं को प्रस्तुत करती है।

टूटना कहानी की नायिका लीना एक उच्च वर्ग से संबंधित है और नायक निम्न वर्गीय है। दोनों के विवाह उपरांत नायक के मन की कुंठा व दोनों का सामाजिक बेमेल उनके संबंधों के टूटने का कारण बनता है और किशोर को रूप व अन्य मनोभाव रूप रोग में झुंझलाहट होती है।

नायिका के द्वारा अपने वर्ग अनुरूप तुरंत विवाह का निर्णय और किशोर से अलग होने का निर्णय ~~दोनों को अकेलेपन में धकेल~~ व किशोर की ज़िंदगी में खालीपन को लीना से

कम मात्रा धीरे-धीरे कुंठा व अकेलापन की ओर ले जाता है।

वहीं मि० सक्सेना से किशोर की तुलना करना व साथ ही लीना के अलग होने पर भी वापस न लौटना आज के युग के मानव की नियति है।

लीना का कानपुर से पत्र लिखना व किशोर द्वारा प्रस्तुत विचार किशोर के मन में लीना के प्रति नफरत व प्रेम दोनों भावों को प्रदर्शित करता है।

कहानी अंत में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचती क्योंकि यथार्थ में परिस्थितियाँ नहीं बदलती तो लेखक कहानी में भी नहीं बदलता है। कहानी जहाँ से शुरू हुई वहीं पर खत्म होती है।

कहानी में नई कहानी की तरह घटनाएँ न्यून (इसमें तो बस पत्र आया है) है वहीं नायक विश्लेषण और सोचता अधिक है।

कहानी में पात्रों की संख्या न्यून है

Copyright : Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

सारी घटनाएँ किशोर बस सोच रहा है कि क्या क्या घटित हुआ।

किशोर अकेलापन व छीनाव से ग्रस्त है जो नई कहानी के नायकों की स्थिति है।

वस्तुत: नई कहानी की विशेषताओं में इसमें सभी विशेषताओं को अपने में समेटे हुए है इसी कारण यह राजेन्द्र यादव जी की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है।

8/15

प्रतीकात्मकता की चर्चा की